साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

वर्ष : 6, अंक : 19 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 30 दिसम्बर 2020 से 5 जनवरी 2021 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

वातावरण में उड़ रहे हैं प्लास्टिक के कण, स्वास्थ्य के लिए हैं बहुत हानिकारक : शोध

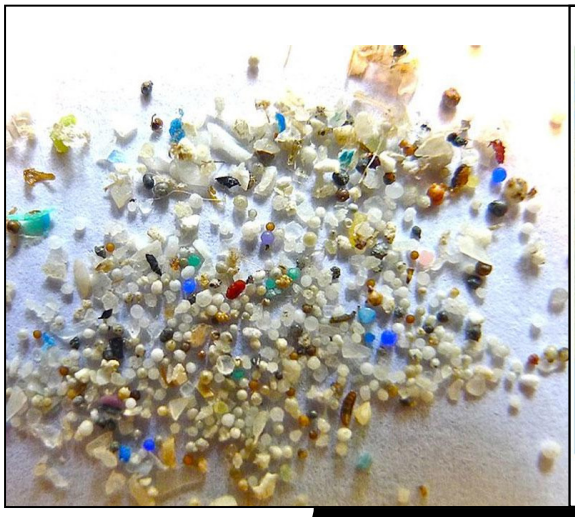

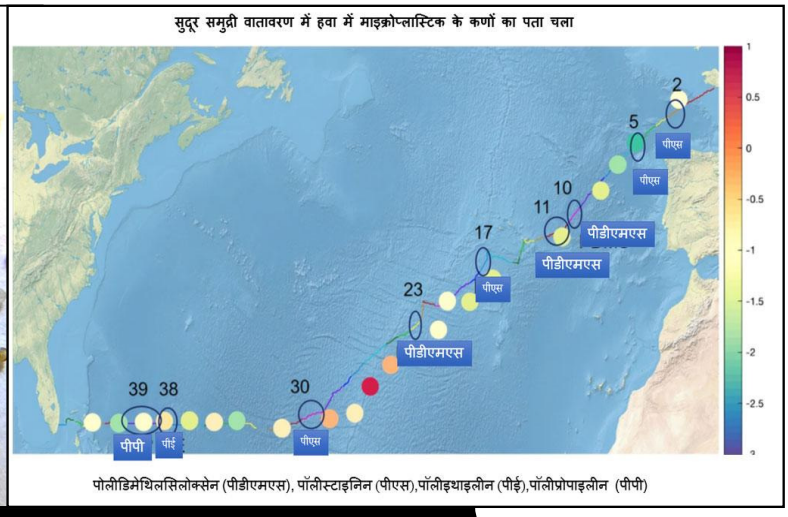

हमारे महासागरों में प्लास्टिक छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाता है, जिसके परिणामस्वरूप माइक्रोप्लास्टिक एक गंभीर पारिस्थितिक समस्या बन रहा है। वाइजमैन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस के एक नए अध्ययन में माइक्रोप्लास्टिक के एक चिंता बढ़ाने वाले पहलू का पता चला है, जो 5 मिमी से अधिक छोटे कणों के रूप में पाया गया है। माइक्रोप्लास्टिक के कण समुद्र से हवा के द्वारा दूर-दराज के हिस्सों और वायुमंडल में मिल रहे हैं। विश्लेषण से पता चलता है कि इस तरह के महीन टुकड़े घंटों या दिनों तक हवा में रह सकते हैं, जिनकी समुद्री पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने की आशंका बढ़ गई है और यह खाद्य श्रृंखला में मिलकर मानव स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है।

पृथ्वी और ग्रह विज्ञान विभाग के डॉ. मिरी ट्रेनिक ने कहा कि कुछ अध्ययनों से पानी के ठीक ऊपर वायुमंडल में माइक्रोप्लास्टिक होने का पता चला है। लेकिन हम पानी के ऊपर कुछ महीन कण पाकर आश्चर्यचकित थे।

समुद्र और हवा के बीच होने वाले संपर्क को समझने के लिए डिज़ाइन किए गए अध्ययनों पर कोरन और वर्डी कई वर्षों से काम कर रहे हैं। जिस तरह से महासागरों ने वायुमंडल से सामग्रियों को अवशोषित किया है, उसका अच्छी तरह से अध्ययन किया गया है। इसके विपरीत प्रक्रिया - एरोसोलिज़ेशन, जिसमें वाष्पशील, वायरस, अल्गल के टुकड़े और अन्य कण समुद्र के पानी से वायुमंडल में मिल रहे हैं, इनकी बहुत कम जांच की गई हैं।

इस प्रयास के रूप में तारा अनुसंधान पोत, जिसमें कई अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ता एक साथ थे, उन्होंने समुद्री जैव विविधता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए वेजमैन लैब में एरोसोल के नमूने एकत्र किए।

एयरोसोल नमूनों में फंसे हुए माइक्रोप्लास्टिक के कणों की पहचान करना और उन्हें मापना आसान था, क्योंकि माइक्रोस्कोप के बिना कणों को बाहर से देखना मुश्किल था। यह समझने के लिए कि प्लास्टिक किस तरह वातावरण में मिल रहा है, टीम ने उनके रासायनिक बनावट और आकार को निर्धारित करने के लिए संस्थान के रासायनिक शोध सहायता के डॉ. इडडो पिंकस की मदद से रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी माप की।

रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी का उपयोग आमतौर पर रसायन विज्ञान में एक संरचनात्मक फिंगरप्रिंट बनाने के लिए किया जाता है जिसके द्वारा अणुओं की पहचान की जा सकती है।

शोधकर्ताओं ने नमूनों में सामान्य प्लास्टिक के उच्च स्तर को पाया, जिसमें पॉलीस्टाइनिन, पॉलीइथाइलीन, पॉलीप्रोपाइलीन और अन्य का पता लगाया। फिर महासागरों के औसत हवा की दिशाओं और गति के साथ-साथ माइक्रोप्लास्टिक कणों के आकार और द्रव्यमान की गणना की। टीम ने दिखाया कि इन माइक्रोप्लास्टिक्स के स्रोत में प्लास्टिक बैग और अन्य प्लास्टिक कचरा होने के आसार थे, जो अक्सर किनारे पर छोड़ दिए जाते हैं, और ये सैकड़ों किलोमीटर दूर समुद्र में बहते रहते हैं।

जहां से नमूने लिए गए उन स्थलों के नीचे समुद्री जल की जांच करने से एरोसोल में उसी प्रकार की प्लास्टिक दिखाई देते हैं, जो इस बात का समर्थन करता है कि माइक्रोप्लास्टिक समुद्र की सतह पर बुलबुले के माध्यम से वायुमंडल में प्रवेश करता है या हवाओं द्वारा दूरदराज के भागों में पहुंच जाता है।

ट्रेनिक कहते हैं कि जब माइक्रोप्लास्टिक वातावरण में होते हैं, तो वे सूख जाते हैं और वे यूवी प्रकाश और वायुमंडलीय घटकों के संपर्क में होते हैं, जिसके साथ वे रासायनिक रूप से क्रिया करते हैं। इसका मतलब है कि इन कणों के महासागर में वापस मिलने से इनके और भी अधिक हानिकारक होने की आशंका होती है। यदि अब इन्हें किसी भी समुद्री जीव द्वारा निगला जाता है तो ये उनके स्वास्थ्य के लिए यह बहुत नुकसान दायक होगा। यह शोध कम्युनिकेशन्स अर्थ एंड एनवायरनमेंट नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

आपदा के रूप में आई महामारी कोविड-19, सामने आया अवसरों का पूरा संसार

नई दिल्ली। आज से कुछ दशक बाद जब किसी संदर्भ में परिस्थितियों का हिसाब-किताब किया जाएगा तो 'कोरोना से पहले, कोरोना के बाद' की ही बात होगी। चीन से पैदा हुई कोविड-19 महामारी एक साल पूरे करने जा रही है, लेकिन इस एक साल में इसने मानव सभ्यता को जितना बदला है, शायद ही किसी घटना या परिघटना ने वैसा परिवर्तन उत्पन्न किया हो। यह महामारी आपदा के रूप में आई, लेकिन अवसरों का पूरा संसार छोड़ गई। याद नहीं है कि साझा दुनिया का भाव कब इतनी मजबूती से महसूस किया गया था। पर्यावरण और आतंक जैसी चुनौतियों के मामले में जब कभी इस कसौटी का इम्तिहान आया तो तमाम किंतु-परंतु भी खड़े हो गए। कोविड-19 ने कुछ समय के लिए ही सही, भेद मिटा दिए हैं। आधुनिक युग की सहूलियतों ने इसके प्रकोप को बढ़ाया तो इस युग के कौशल ने ही उबरने की राह भी बताई। अब नई संस्कृति हमारे आसपास आकार ले रही है। अनुभव अनंत हैं। जीत करीब है, क्योंकि जीवन ने इतनी आसानी से हार मानने से मना कर दिया। यह जिजीविषा ही सबसे बड़ा संबल साबित हुई। सरकारों के उपायों, प्रशासन की सक्रियता और अदालतों की चिंता से भी आगे कोविड-19 को हराने का लोगों का जज्बा ही आखिरकार जीतेगा। इस विकराल चुनौती में लापरवाही क्षोभ जगाती है, लेकिन सभी को भरोसा सामाजिक संकल्प की शक्ति पर ही है। जब जीवन ठहर गया हो, हर तरफ अनिश्चितता का माहौल हो, सड़कों पर अपना ठिकाना बदलने की जद्दोजहद में जुटे लोगों की लंबी कतारें हों तब भी वह भरोसा ही था जो लोगों को संबल दे रहा था। कोविड-19 के लिए चीन को कितना जवाबदेह ठहराया जा सकेगा, यह तो वक्त बताएगा, लेकिन इस आपदा ने पूरी दुनिया को बहुत कुछ सिखा तो दिया ही है। हो सकता है कि दुनिया अब ऐसी किसी चुनौती से जरा भी न घबराए!

पर्यावरण प्रदूषण धुआं, धुंध और धृष्टता

पराली जलाना, आतिशबाजी, गंभीर वायु प्रदूषण, सर्दी और कोरोना जैसी महामारी.. इन सबका घातक मेल हमारे कुछ विशेषज्ञ-सचेतक समझ रहे थे, तभी इनके मिलनकाल से पहले ही वे इसे रोकने में जुटे थे। जब कोरोना महामारी अपने चरम पर थी, उन्हीं दिनों पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बड़े किसानों द्वारा खेत में ही फसल अवशेषों (पराली/पुआल) को धुआंधार जलाना जारी था। यह गलत परंपरा पिछले कई दशकों से जारी है। एक अध्ययन के मुताबिक, पंजाब और हरियाणा में हर साल 3.5 करोड़ टन पराली जलाई जाती है। इससे 14.90 करोड़ टन कार्बन डाईऑक्साइड, 90 लाख टन कार्बन मोनो ऑक्साइड, 2.5 लाख टन सल्फर ऑक्साइड और 12.8 लाख टन पार्टिकुलेट मैटर इस क्षेत्र की हवा में घुल जाते हैं। इससे दिल्ली-एनसीआर में सांस से जुड़े रोगों में पचास फीसद तक इजाफा हो चुका है। पंजाब और हरियाणा में कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं। इसका प्रतिकूल असर स्वास्थ्य पर तो पड़ ही रहा है, साथ ही खेतों की उर्वरा शक्ति भी नष्ट हो रही है। उत्तर में पर्वतराज हिमालय के ग्लेशियर इस घटना से तेजी से पिघल रहे हैं जो एक बड़ी आबादी के जीवन के लिए अहम हैं। आज से पांच साल पहले 10 दिसंबर, 2015 को राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण (एनजीटी) ने राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में फसल अवशेष को जलाना पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया था। वायु और प्रदूषण नियंत्रण कानून, 1981 में भी फसल अवशेष जलाना अपराध है, लेकिन तमाम कायदे-कानूनों के लचीले क्रियान्वयन से यह गलत परंपरा अभी तक धुंआ उगल रही है।

टिड्डी दल का हमला फसलों पर छाया प्रकोप

2020 के मध्य में टिड्डियों के भीषण हमले ने सभी को हैरान-परेशान कर दिया। इससे पहले भारत में टिड्डियों का इस तरह का बड़ा हमला वर्ष 1993 में देखा गया था। दरअसल, टिड्डियों का पहला दल 2019 की शुरुआत में खाड़ी देशों में पहुंचा। फिर धीरे-धीरे वहां से पूरब का रुख किया। पाकिस्तान में तबाही के बाद पश्चिमी और मध्य भारत में अरबों की संख्या में दाखिल टिड्डियों ने करीब चार राज्यों में हजारों हेक्टेयर फसल बर्बाद कर दी। 2020 में भारत में टिड्डी दल का पहला हमला अप्रैल के आसपास राजस्थान में हुआ। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ सहित इनका प्रकोप गुजरात और पंजाब के भी कुछ क्षेत्रों में रहा। भोपाल में विधानसभा भवन की दीवारों पर करोड़ों टिड्डियों के चिपके होने की तस्वीरें खूब वायरल हुईं। टिड्डियों के आक्रमण से निपटने के लिए कहीं कीटनाशकों का छिड़काव किया गया तो कहीं ड्रोन की मदद ली गई। किसानों ने पारंपरिक तरीके से ढोल-बर्तन आदि पीटकर भी इन्हें खदेड़ने का प्रयास किया। आखिरकार बरसात शुरू होने के बाद टिड्डी दल का प्रकोप कम होता गया।

लॉकडाउन प्राण रक्षा की लक्ष्मण रेखा

सांसें चलती रहें, इसके लिए लॉकडाउन ही एकमात्र विकल्प था। भारत में 22 मार्च, 2020 को जनता कर्फ्यू के रूप में हुए ट्रायल के बाद 25 मार्च, 2020 से लॉकडाउन की क्रमिक शुरुआत हुई। 30 जून तक पांच चरणों में कुल 98 दिनों तक देश लॉकडाउन में रहा। अस्पताल, बैंक, किराना जैसी अत्यावश्यक सेवाओं-सुविधाओं को छोड़ शेष सब कुछ बंद था। 1.3 अरब आबादी वाले भारत के लिए यह कठिनतम समय था। उस देश में जहां आबादी का बड़ा हिस्सा गरीबों, रोज कमाने-खाने वाले लोगों का हो, वहां समूची अर्थव्यवस्था पर ताला जड़ना अभूतपूर्व चुनौती था। कोरोना, लॉकडाउन और क्वारंटाइन... भारत में अंग्रेजी के ये तीन शब्द डर का दूसरा नाम बन गए। जो बीता, वह अकल्पनीय था। प्रवासी श्रमिकों ने सर्वाधिक कष्ट उठाए। मीलों लंबी पदयात्रा को बाध्य हुए। अंततः उन्हें सुरक्षित घर पहुंचाने के लिए श्रमिक स्पेशल ट्रेनों की व्यवस्था की गई। इनकी दशा से दुखी लोगों ने चंदा कर हवाई जहाजों की व्यवस्था भी की। अंततोगत्वा वे गांवों-घरों तक पहुंच गए। लॉकडाउन की प्लानिंग में अब दूसरी बड़ी चुनौती सामने थी। श्रमिक अपने गांव तो पहुंच गए, पर खाएंगे क्या? तब केंद्र सरकार द्वारा जारी 'गरीब कल्याण योजना', 'गरीब अन्न योजना' इत्यादि उनके लिए सहायक सिद्ध हुईं। छोटे-मोटे उद्योग-धंधों की भी स्थिति बिगड़ चुकी थी। ऐसे में केंद्र सरकार द्वारा जारी 20 लाख करोड़ रुपए का राहत पैकेज और 'आत्मनिर्भर भारत योजना' क्रांतिकारी पहल साबित हुई। भला हो टेक्नोलॉजी का कि बच्चों की शिक्षा इस दौरान ठप नहीं हुई और स्वास्थ्य सेवाएं भी सुचारू रहीं। हां, लॉकडाउन से भारत की अर्थव्यवस्था को जो झटका मिला है, वह समय के साथ ही भर सकेगा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष सहित कुछ विशेषज्ञों का आकलन है कि प्रति व्यक्ति आय में जो कमी और ठहराव आया है, उसे पहले जैसी स्थिति में पहुंचने में ही तीन से पांच साल तक लग सकते हैं।

कोरोना युद्ध मास्क के पीछे नायक

कोविड-19 महामारी से लड़ने वाले उन सिपाहियों को सलाम जिन्होंने तब अपनी जान की परवाह किए बिना इस आपदा से संघर्ष किया जब हर कोई इस अज्ञात-अनजान खतरे से डरा-सहमा था। वे श्रेय और सराहना के हकदार हैं। उनके लिए तालियां-थालियां बजनी चाहिए। कोरोना वैक्सीन की तलाश में जुटे और फिर कामयाब हुए वैज्ञानिक हीरो के रूप में उभरेंगे, लेकिन उन लोगों को कभी नहीं भूला जाना चाहिए जो सुरक्षा के साधनों के प्रति शंकाओं के बीच जमीन पर जूझ रहे थे, अपनी और अपने परिवार की चिंता किए बगैर अपना फर्ज निभा रहे थे और इस सबसे अधिक एक किस्म की अस्पृश्यता का भी सामना कर रहे थे। कृतघ्न लोगों ने उन्हें निशाना भी बनाया, लेकिन उनके इरादे डिगे नहीं। कोरोना से मुकाबले के लिए उतरे डॉक्टर, स्वास्थ्यकर्मी, सुरक्षाकर्मी और स्वच्छाग्रही असली विजेता हैं। अपने देश में खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनके योगदान को कई बार रेखांकित किया और सुप्रीम कोर्ट ने आठ माह से बिना विश्राम लिए काम करने वाले डॉक्टरों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के प्रति सहानुभूति भी जताई और उनकी मदद का भी आग्रह किया। आठ महीने तक लगातार और वह भी चुनौतीपूर्ण माहौल में काम करते हुए कोई भी मानसिक रूप से थक सकता है, लेकिन इन कोरोना वॉरियर्स के लिए यह दबाव ही जीत की प्रेरणा था। अगर इन कोरोना योद्धाओं को कानूनी संरक्षण देने की भी जरूरत महसूस की गई तो यह समझा जा सकता है कि मुट्ठी भर लोगों ने उनके प्रति कैसा गैरजिम्मेदाराना व्यवहार किया होगा।

कोरोना समेत कितनी प्राकृतिक आपदाओं ने कितना कहर ढाया?

इस साल को त्रासदियों के वर्ष के रूप में याद रखा जाएगा. लेकिन, क्या आपको याद है कि कोरोना के अलावा और कितनी बड़ी आपदाएं झेली गईं? सिर्फ भारत ही नहीं, दुनिया भर में? देखिए ?कैसे आसमान से बरसी मुसीबत, तो कभी संकट की लपटें उठीं, कभी धरती चीरकर आपदा आई तो आबोहवा ही आफत हो गई...

जंगल की आग

ऑस्ट्रेलिया ने जनवरी में पर्यावरण के लिए खतरा बनी आग की त्रासदी झेली. ब्लैक समर के नाम से चर्चा में रही इस आग में 3 करोड़ एकड़ का जंगल खाक हुआ, 33 लोग और करीब 1 अरब जानवर मारे जाने के आंकड़े सामने आए. 24 दिसंबर तक साल भर के आंकड़ों के मुताबिक कैलिफोर्निया में इस साल जंगलों की आग से करीब 43 लाख 60,000 एकड़ का जंगल राख हो गया. धरती के फेफड़े एमेज़ॉन के रेनफॉरेस्ट में सितंबर में 32 हज़ार से ज़्यादा हॉटस्पॉट रिकॉर्ड हुए. इस साल की आग पिछले साल से ज़्यादा खतरनाक रही और अनछुए इलाकों तक फैली. इन घटनाओं के बीच भारत के उत्तराखंड में 51.34 हेक्टेयर जंगल जलाने वाली आग की खबर दब गई।

भूकंप से तबाही

मार्च के महीने में क्रोएशिया की राजधानी ज़ाग्रेब में भूकंप से कई इमारतें ढह गई थीं, जिससे 6 अरब डॉलर का नुकसान हुआ. जून में मेक्सिको में 7.4 तीव्रता के भूकंप ने कहर ढाया, जिसमें मारे तो 10 लोग गए लेकिन भवन काफी क्षतिग्रस्त होने से हज़ारों लोग सड़कों पर आ गए. अक्टूबर में तुर्की के इज़मीर में भारी भूकंप से 116 लोग मारे गए और 1000 से ज़्यादा घायल हुए. 2020 विदा होने में दो ही दिन बाकी थे, कि क्रोएशिया में एक और भूकंप ने पेट्रिंज शहर में तबाही मचाई. चीन, ईरान, भारत और रूस में भी भूकंप के झटकों की खबरें बनी रहीं।

तूफान

साल 1999 के बाद से बंगाल की खाड़ी में दूसरा सबसे बड़ा तूफान अम्फान रहा, जिसने मई के महीने में पश्चिम बंगाल में तबाही मचाई. इस तूफान से 86 लोग बंगाल में मारे गए. जान के साथ माल का काफी नुकसान हुआ. बिजली कटी, लोग बेघर हुए, ट्रांसपोर्ट प्रभावित रहा. उत्तर व दक्षिण 24 परगना, पूर्व और पश्चिम मिदनापुर, कोलकाता, हावड़ा और हुगली ज़िलों में तूफान से नुकसान हुआ. वहीं, ओडिशा में करीब 45 लाख लोग इस चक्रवात से प्रभावित हुए. दूसरी ओर, नवंबर में फिलीपींस में वामको तूफान ने पिछले चार दशकों में सबसे ज़्यादा तबाही मचाई. कागयान वैली और कई उत्तरी इलाके लगभग डूब गए।

टिड्डी हमला

रेगिस्तानी टिड्डी दलों ने भारत में जून और जुलाई में हमला किया. राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश समेत 10 राज्यों में टिड्डियों ने भारी तबाही मचाई. खासकर राजस्थान में ऐतिहासिक रूप से टिड्डियों ने फसलें तबाह कीं. सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि अफ्रीका के एक दर्जन से ज़्यादा देशों सहित पाकिस्तान और नेपाल जैसे देश भी टिड्डी हमलों से जूझते रहे. केन्या में 70 और भारत, इथोपिया व सोमालिया में 25 सालों में यह सबसे बड़ा संकट रहा. वर्ल्ड बैंक के अनुमान की मानें तो सिर्फ अफ्रीका में ही इस आपदा से 9 करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि प्रभावित रही और आगामी सालों में 9 अरब डॉलर तक का नुकसान टिड्डियों के कारण हो सकता है।

बाढ़

जुलाई में भारत के पूर्वोत्तर राज्य असम में करीब 20 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हुए और 105 मारे गए. 42 हज़ार से ज़्यादा विस्थापित लोगों को 236 राहत कैंपों में शिफ्ट किया गया. काज़ीरंगा नेशनल पार्क में 137 से ज़्यादा जानवर बाढ़ से मारे गए. इसके बाद सितंबर में भी असम की बाढ़ में 34 हज़ार लोग प्रभावित हुए. वहीं, जुलाई में ही जापान में भारी बारिश से बने बाढ़ के हालात में 77 मौतें हुईं, 15 हज़ार से ज़्यादा मकान ढहे, 11 पुल क्षतिग्रस्त हुए और 13 लाख लोगों को विस्थापित होना पड़ा. इस साल की शुरूआत में बाढ़ से इंडोनेशिया में करीब 4 लाख लोग विस्थापित हुए।

वायरस

आखिरकार इस साल की शुरूआत से आखिर तक जारी रहने वाली महामारी 2020 की सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा साबित हुई. कोविड 19 ने दुनिया भर में करीब 18 लाख जानें लीं और 8.2 करोड़ लोगों को चपेट में लिया. स्टैटिस्टा की मानें तो 2020 में ग्लोबल जीडीपी को कोरोना के कारण बेस्ट केस में 76.7 अरब डॉलर का नुकसान होना है. खराब केस में करीब 347 अरब डॉलर तक का नुकसान होना भी ताज्जुब की बात नहीं होगी. इनके अलावा, अंटार्कटिका में ग्रीन स्नो और फिलीपींस में ज्वालामुखी धधकने के खतरे भी बने रहे।

इंसान ने छोड़ा क़ुदरत ने अपनाया, वो तस्वीरें जिनका 2020 अर्थ प्रतियोगिता में दिखा जलवा

इंसानों की छोड़ी विराम जगहों पर क़ुदरत का विस्तार... जिसे इंसानों ने छोड़ दिया उसे क़ुदरत ने अपना बना लिया. ये किसी कविता की पंक्तियां नहीं है. यह एक फ़ोटोग्राफ़ी प्रोजेक्ट का थीम था और इस प्रोजेक्ट ने 2020 अर्थ फ़ोटो प्रतियोगिता जीत ली है। फ्रांस के फ़ोटोग्राफ़र जोनाथन जिमेनेज़ उर्फ़ जोंक की इस सीरीज़ में अलग-अलग तरह की तस्वीरें हैं. विरान-ख़ाली पड़े कॉफ़ी शॉप की तस्वीर, अबख़ाज़िया में ख़ाली पड़े थिएटर की तस्वीर, पुरत्गाल के एक होटल का चित्र और इटली के एक स्वीमिंग पूल की तस्वीर. इस प्रतियोगिता के लिए 2600 सबमिशन हुए थे और उनमें से इस थीम को विजेता चुना गया है. पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता फोटो जर्नलिस्ट मारिसा रॉथ ने इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता की. उन्होंने कहा, हमने जॉक्स की तस्वीरों को विजेता के तौर पर चुना क्योंकि उनकी तस्वीरों में उच्च श्रेणी के कौशल और दृष्टि का इस्तेमाल किया गया है. उनकी तस्वीरें मानव और प्रकृति के सहअस्तित्व के द्वंद्व को रेखांकित करती हैं। फॉरेस्ट्री इंग्लैंड और रॉयल जियोग्राफ़िकल सोसायटी ने छह श्रेणियों में विजेताओं का चयन किया. इसके लिए 50 तस्वीरों और चार फ़िल्म्स को शॉर्टलिस्ट किया गया था. इस प्रतियोगिता की कोशिश रहती है कि पर्यावरण से जुड़े मुद्दों पर ली गई सबसे बेहतरीन तस्वीरों को सामने लाया जा सके और इस संबंध में लोगों को बातचीत के लिए प्रोत्साहित करना है।

सोशल डिस्टेंसिंग की वजह से लोगों की रचनात्मकता भी देखने को मिली. अमेरिका में एक कैथोलिक पादरी ने दूरी बरतते हुए पवित्र जल के छिड़काव के लिए कुछ इस तरह का तरीका अपनाया।

लॉकडाउन के पहले दौर के बाद बार्सिलोना के ग्रैन टीट्रे डेल लिसु कंसर्ट हॉल में दो हज़ार से ज्यादा नर्सरी के पौधों के सामने परफॉर्मेंस दिया गया. ये उस मुश्किल वक्त में कला के महत्व को दर्शाने की एक कोशिश थी।

प्रकृति निखर गई, हजारों मील से हिमालय दर्शन

लॉकडाउन में 25 मार्च से 25 अप्रैल के दौरान देश के 67 प्रमुख शहरों का एक्यूआई 50 से कम रहा। पिछले वर्ष इसी दौरान किसी शहर का एक्यूआई 50 से कम नहीं था। दिल्ली में भी हवा मध्यम दर्जे की रही।

जुलाई में कर्नाटक के काबिनी जंगल में मौजूद दुर्लभ ब्लैक पैंथर दिखा। स्पीति वैली में विलुप्त हो चुका हिमालय सीरो दिखा। उत्तराखंड में 50 साल बाद सोंबर बैट प्रजाति का चमगादड़ दिखा।

लॉकडाउन के दौरान प्रकृति भी निखरी तो सैकड़ों किलोमीटर दूर से हिमालय दर्शन हुए। जालंधर से धौलाधर रेंज व असम से कंचनजंघा और सहारनपुर से हिमालय की चोटियां दिखाई दीं।

जुलाई में बाढ़ ने असम के 33 में से 30 जिलों को चपेट में ले लिया। 70 लाख लोग प्रभावित। 125 लोगों की जान गई। बाढ़ ने काजीरंगा नेशनल पार्क के नौ गैंडों समेत 110 जानवरों की भी जान ले ली।

20 मई को अम्फान तूफान पश्चिम बंगाल और ओडिशा के तट पर पहुंचा। बंगाल में 5 हजार से ज्यादा घर क्षतिग्रस्त हुए और सैकड़ों पेड़ उखड़ गए। तूफान ने 118 लोगों की जिंदगी छीन ली।

तुर्की में 30 अक्टूबर को भूकंप आया। रिक्टर स्केल पर तीव्रता 7.0 मापी गई। तुर्की के तीसरे सबसे बड़े शहर इजमिर की 20 इमारतें ढह गईं। तुर्की में 116 लोगों की मौत हुई और 1034 लोग जख्मी हुए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008